उंबरखिंड़ में करारी हार

करतलबखानाची अंबे नळीतील शरणागती - भाग 2.

उंबरखिंड का घटना चक्र

करतलबखान की फजीहत – अम्बेनळी में समर्पण – भाग 2

मुगल सैन्य भीषण कुरवंडे घाटी में घिर गये?

Select a location highlighted in blue to enter Street View.

प्रसिद्ध ड्युक्स नोज की बाकदार चोटी

650 m

500 m

360 m

230 m

160 m

130 m

90 m

Chavani

चावनी

जासूसी तीसरी आंख है!

- शिवाजी महाराज तीसरी आंख थी उनका गुप्तचर संगठन। उसमे कितने लोग कार्यरत होंगे यह समझना असंभव है।
- गुप्तचरोंने उनकी सैन्य और राजनीतिक सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नेटवर्क विशाल और सूक्ष्म था, जो कई क्षेत्रों और गतिविधियों को समावेशित किया जाता था। इसमें अत्यधिक कुशल एजेंट शामिल थे, जिनमें बहिरजी नाईक, वल्लभदास गुजराती, सुंदरजी परभुजी गुजराती और विश्वासराव दिघे जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति शामिल थे।
- जानकारी इकट्ठा करने के अलावा, नेटवर्क के एजेंटों ने विभिन्न भूमिकाएँ निभाईं, जैसे दुश्मन की राजधानी में चली बातें, समझौतो पर हस्ताक्षर आदि में राजनयिक और वकील के रूप में कार्य करना। गुप्तचर संगठन ने दुश्मन के हमलों को विफल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- गुप्तचरों को में भाषा की समझ, अलग पहनावा, ख़बरियों कोको खुले तौर पर पैसे देने की रियायतें, प्राप्त सूचनाओं को तुरंत सही लोगों को सौंपने की श्रृंखला, सबूत इकट्ठा करने के दो या दो से अधिक तरीके आदि महत्वपूर्ण बाते थी।
- **विशाल समुद्र पर जासूसी करना कितना कठिन है, मराठों को समुद्री जासूसी में भी निपुणता प्राप्त की थी।**जब भी शाहिस्ते खान के करतलब खान ने कोंकण क्षेत्र पर हमला किया, शिवाजी महाराज ने बड़ी तेजी और जोश के साथ उन्हें हरा दिया। यही इस मराठी हेरागिरी की सफलता भी है. जिससे प्रभावी नौसैनिक संचालन संभव हो सका।

6. महाराजने खान को यहीं घेरने का निर्णय क्यों लिया?

- विंग कमांडर शशिकांत ओक की दृष्टी से
- महाराज करतलबखाना की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखते थे।
- उन्हें पता था कि खान कोंकण में एकबार बैठ गया तो उत्तरी कोंकण का रास्ता बंद हो जाएगा।
- घाटियों के घने जंगलों, और पहाड़ों पर निर्मित किलों और दुर्गों जैसे लाभ हमें न मिलकर उनके पक्ष में चले जायेंगे।
- समुद्र पर नियंत्रण एवं राजस्व पूर्णतः समाप्त हो जायेगा।
- खान को बाद में कोंकणसे खदेड़ना असंभव होगा।

पाली थाने का महत्व का महत्व
भिवंडी किला
कल्याण किला
Vasai Virar
Bhiwandi
Borivali
Thane
Kalyan
Junnar
Choul, Alibag, Maharashtra
Panvel
Manchar
Mumbai
Karjat
Rajgurunagar
Khopoli
Chakan
चौल बंदर
पाली नाका
Pimpri
Pali
Pune
23 April 2024
सुधागड
MAIN TOWN
WIDSAI
Khopoli Pali Road
CHIVE
KONDGAON
PIGONDE
CHIKHALGAON
RASAL
NADSUR
कल्याण रस्ता वसूली थाना
KADSURE
Pali
Sudhagad
PUI
NEW TOWN
पाली थाने का महत्व
SH93
TAMSOLI
SH94
BHISE
चौल बंदरमार्ग वसूली नाका
पाली - सुधागड थाना
KHAD SAMBALE
AINGHAR
APATWANE
अहमद नगर की निज़ामशाही के पास की यह थाने मुगलों की दुधारू गाय थी ।शिवाजी महाराज से उसे वापस पाना जीवन और मृत्यु का प्रश्न था ।
NIDI TARF ASHTAMI
Roha
VITTHALWADI
DIGHEWADI
© 2022 TomTom

७. महाराज ने उम्बर पहाड़ी पर अपना सैन्य शिविर क्यों रखा?

- लेफ्टिनेंट जनरल दत्तात्रेय शेकतकर एक अनुभवी और कुशल जनरल हैं। उनका कथन है कि युद्ध जीतने के लिए न केवल वीरता और कौशल की आवश्यकता होती है, बल्कि रणनीतिक सोच और ठोस निर्णय लेने की क्षमता भी होती है।
- जनरल अपनी निगरानी चौकियों के लिए हमेशा युद्ध के मैदान में ऊंची जमीन चुनते हैं। इस रणनीतिक विकल्प के कई फायदे हैं। सबसे पहले, कमांडर उच्च भूमि से क्षेत्र में घटनाओं का आसानी से निरीक्षण कर सकते हैं।
- इससे दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखना और उसके अनुसार योजना बनाना आसान हो जाता है।
- दूसरे, ऊंचे पद से अपनी सेना के दूसरे कमांडरों को संदेश भेजना आसान होता है. इससे सेना का समन्वय और कार्यकुशलता बढ़ती है।

सफ़ेद रंग के वेष में रुबाबदार शिवराय

सेनानायक करतलबखान की उलझन

यह क्षेत्र उत्तर भारत के युद्धक्षेत्रों के लिए बिल्कुल नया था। हालाँकि पहाड़ियाँ नई नहीं थीं, सैनिकों ने पहले कभी इतनी खतरनाक ढलानों, ऐसे संकरे रास्तों का अनुभव नहीं किया था जिनके एक तरफ गहरी खाइयाँ और दूसरी तरफ खड़ी पहाड़ियाँ थीं।

- खुरुंदा नामक घाट से उतरते समय भारी अफरा-तफरी मच गयी. खड़ी ढलानों से नीचे जानवरों और सामान को ले जाना बेहद कठिन था। कुछ जवान हादसों का शिकार भी हो गये.
- इन सब के चलते कमांडर करतलब खान के सामने दुविधा थी कि वह आगे बढ़े या अपनी रणनीति बदले।
- उन्होंने दूर खड़े रायबागन को अपने तंबू में बुलाया और उनसे सलाह मांगी कि इस स्थिति में क्या किया जाना चाहिए।

रायबागन से परामर्श

- घटनाओं के चक्र को दूर से देखते हुए, महिला योद्धा रायबाघन तम्बू में पहुंची, यह अनुमान लगाते हुए कि खान ने बाकी बड़े सरदार होते हुए उसे क्यों बुलाया होगा।
- 'मुझे क्या करना चाहिए?' उसने हाथ से सलाह मांगने के लिए बैठने का इशारा करते हुए पूछा। उन्होंने कहा, 'अंदाजा नहीं है कि सिवा ने कितनी सेनाएं तैयार की हैं। यह संभव है कि हम उसे पीछा करने के लिए मजबूर करेंगे, यह बहाना बनाकर कि वह छिपी हुई सेना को हमारे पीछे छोड़ देगा और वह अभी भाग जाएगा'।
- रायबाघन ने कहा, 'अगर ऐसा है तो हम भी पीछे जाएंगे। एक अवसर के रूप में ठीक भी हो सकता है। लेकिन हमें यह सोचना चाहिए कि सारा भारी सामान छोड़कर घाटी से नीचे उतरने की कड़ी मेहनत से थक चुके हमारे सैनिक कब तक शिवाजी के सैनिकों का पीछा कर पाएंगे'?

करतलबखाना को अपनी गलती का एहसास हुआ

- वह जानता था कि हम एक लंबी दूरी और दीर्घकालिक उद्देश्य पर जा रहे हैं। शायद शिव आपको दूर पहाड़ियों से देखता भी रहा होगा। यह भारी सामान, बडे जानवर हमारी गर्दन पर एक बोझ है जब तक कि हम पास के मजबूत किले में शरण न लें।
- अम्बा नदी तल के इस संकरे दर्रे में हम 20 हजार से अधिक लोग एकत्रित हैं। अब से, इस संकरी जगह में सिवा पर हमला करनाआत्मघाती होगा।
- दूसरे सरदारों ने उसे इस बात से अवगत कराया कि इस स्थान पर पलटवार करना ठीक नहीं है, यह ध्यान में रखते हुए कि वह इस पास में फंसा हुआ है। अन्य वरिष्ठजनों से चर्चा के बाद यह विचार सामने आया कि को हमें संधि करके जाने देना चाहिए।
- पीछा करने पर और जाल में फंसने सकते हैं, आप पकड़ लिए जाएंगे और अपनी और अन्य सरदारों की जाने जोखिम में डाल देंगे। इसके बजाय, बातचीत के लिए एक वकील भेजने का निर्णय लिया गया।

शिवाजी महाराज की छावणी में

घटनाक्रम: शिवाजी महाराज नदी के किनारे स्थित एक टेकड़ी पर खड़े होकर युद्ध का अवलोकन कर रहे थे। उन्होंने अपने सैनिकों को नदी के किनारे फंसे हुए दुश्मन सैनिकों पर तलवार से हमला करने का आदेश दिया। यह घातक युद्ध लगभग एक घंटे से अधिक समय तक चला।

दूर से आता दूत: कुछ दूरी पर, खाना के तंबू से एक सफेद झंडा लिए हुए एक दूत आते दिखाई दिया। निहत्था होने के कारण तलवारबाजों ने उसे जाने दिया। बाणों की बौछार से बचते हुए, वह पूछ रहा था, "तुम्हारा सेनापति कहाँ है?" उसने टेकड़ी की ओर इशारा किया।

वकिल दूत की मुलाकात: वकिल दूत, भारी गड़बड़ी और धक्का-मुक्की के बीच रास्ता बनाते हुए, गारमाळा की तलहटी पर 100 मीटर चढ़ गया। शिवाजी महाराज के सैनिकों ने उसकी तलाशी ली और उसे लगभग 10 मीटर दूर खड़ा कर उसकी पहचान पूछी।

शिवाजी महाराज का संदेश: महाराज ने अपने आदमी के माध्यम से उसे बताया, "यह हमारी सेना तुम्हें मारे बिना अब वापस नहीं जाएगी। युद्ध की स्थिति में मैं सेना को शांत रहने का आदेश नहीं दे सकता। यह संदेश अपने खाना को अच्छी तरह से समझाओ।"

विश्लेषण: इस घटना में शिवाजी महाराज की रणनीति, शांति और साहस झलकता है। वे युद्ध का अवलोकन कर रहे थे और सही समय पर सही रणनीति बना रहे थे। उन्होंने दुश्मन के दूत को निर्णायक उत्तर दिया और दुश्मन को हार मानने पर मजबूर कर दिया।

वकील की भाग दौड़ शुरू हुई

- *वकील ने यह संदेश करतलबखान के कान में डाला और उससे पूछा कि आगे क्या करना है।जब उपस्थित विभिन्न सरदारों से समाचार मिला कि हमारी सेना अचानक तितर-बितर हो गई है और हमारे जानवर, हमारे अनाज और शिबांडी के भंडार, गोला -बारूद और बंदूकें सामान में फंस गई हैं,
- तो बंदूकधारियों और बंदूकधारियों ने कहना शुरू कर दिया कि पीछा जारी नहीं रखा जा सकता है। बक्से.* वापसी का रास्ता आसान नहीं है. चूंकि सेना दोनों किनारों पर तैनात है, इसलिए हमारे सैनिकोंके लिए उन्हें मारने और इस तरफ की पहाड़ियों के पार भागने का रास्ता बंद है।* करतलब खान ने स्थिति का जायजा लेने के बाद वकील को सलाह दी कि वह महाराज से पूछे
- कि अगर वह एक बार फिर लड़ाई बंद करना चाहते हैं तो क्या करें और वकील को वापस भेज दिया।

समर्पण की चालाक शर्तें

- दूसरी बार लौटकर वकील संदेश लेकर आया कि यदि खान अपना शस्त्र, सामान, पशुधन और नकदी धन को छोड़कर खाली हाथों कुरवंडा घाट से चले जाएं तो इस पर विचार किया जा सकता है।
- उसने यह भी कहा कि यदि आप उनकी यह मांग स्वीकार कर लेते हैं और हमला रोककर शांति स्थापित हो जाती है, तो पलटवार करने और शिवाजी महाराज को पराजित करने का अवसर मिल सकता है।
- "युद्ध रोककर या वार्ता के माध्यम से समय प्राप्त करने का निर्णय लेते हुए हम अपने शस्त्र जमीन पर रख देते हैं। आप भी अपने शस्त्र जमीन पर रख दें। मराठा सैनिकों के आत्मसमर्पण करने वालों की रक्षा हमारे सेनापति सफलतापूर्वक करेंगे।" ऐसा विचार करके वकील तीसरी बार मिलने आया...
- महाराजा ने प्रस्ताव सुना तो उन्होंने कहा कि आपकी शर्तें स्वीकार करना संभव नहीं है। यह समझते हुए कि अब समय बर्बाद करने का कोई मतलब नहीं है, वकील ने अपना सफेद झंडा इस तरह से हिलाया कि वह खाना को दिखाई दे सके।

महाराज का वकील को कठोर संदेश !

- महाराज ने वकील को स्पष्ट रूप से कह दिया कि वे उसकी शर्तों को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। उन्होंने दृढ़ता से घोषित किया कि उनके सैनिक हथियार नहीं रखेंगे और इसके विपरीत, शत्रु पक्ष को तुरंत सभी शस्त्र समर्पित करने होंगे। यदि इसमें थोड़ा भी विलंब हुआ या विरोध हुआ, तो परिणाम भयानक और शत्रु पक्ष के लिए विनाशकारी होगा, ऐसी महाराज ने चेतावनी दी।
- इसके अतिरिक्त, महाराजा ने आदेश दिया कि शत्रु पक्ष के सेनापतियों और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को तुरंत कैद कर लिया जाएगा और उन्हें 'यरगमाल' (कैद) में रखा जाएगा। इन कैदियों को तंबू में ही रखा जाएगा और उन पर महाराजा के सैनिकों की कड़ी निगरानी होगी। यह कारावास तब तक जारी रहेगा जब तक शत्रु पक्ष की सेना के सभी शस्त्र महाराजा के सैनिकों के पास जमा नहीं हो जाते।
- इन कठोर शर्तों पर जोर देने के लिए, महाराजा ने श्वेत ध्वज फहरा कर शत्रु पक्ष को आत्मसमर्पण स्वीकार करने का स्पष्ट संदेश दिया। वकील, महाराजा के निर्णय से स्तब्ध और भयभीत, हताश होकर सिर हिलाते हुए शांत रहा। वह समझ गया था कि महाराजा का इरादा दृढ़ है और उनके साथ युद्ध करना निश्चित विनाश है।

अंबा नदी पर स्थित उंबरखिंड समरभूमी स्मारक

करतलब और अन्य खान सरदारों को कैद कर लिया गया...

- नेतोजी पालकर, तानाजी मालुसरे तथा येसाजी कंक की देखरेख में शिवाजी महाराजने अपने हलकारों से सामने की पहाड़ी से अपने सैनिकों संदेश भेजा।
- 'करतलबा खान और अन्य सरदारों को एक तंबू में गिरफतार कर उनके हथियार छीनने और उन्हें बांधने के आदेश मिलने पर एक संदेश महाराज को देकर सूचित किया गया कि
- करतलबखान और उसके प्रमुखों को कैद कर लिया गया, है । तबतक सरनौबत नेतोजी पासकरने एक पहाड़ी से और येसाजी ने दूसरी पहाड़ी से सभी के शरणागती की चेतावनी दी।

आत्मसमर्पण करने वालों के शस्त्र, जानवर, नौकरों के कैद किया गया...

- शिवाजी महाराज ने खुद को सुरक्षित दूरी पर रखकर अपनी सेना को आदेश दिया।
- "दुश्मन से सभी हथियार हटाओ और उन्हें एक जगह इकट्ठा करो।
- मुगल सेना के साथ आये सेवक, तोपची, गोला-बारूद और बारूद की बोरियाँ ढोने वाले, घुड़सवार पशुओं के नौकरों को अपने (मराठों के)पास रखें। जो व्यापारी, रसोइया, रसोइया, कुली मुगल के साथ वापस जाना चाहते हैं उन्हें वापस भेजो।' महाराज के आदेश का पालन करना शुरू हो गया।
- 'महाराज ने आत्मसमर्पण करने वाले घायल सैनिकों को बिना वापस गए पास के गाँव में जाने और दवा लेने की अनुमति दी'।
- मुगलों के साथ आए कुछ मराठा सरदार महाराज से जुड़ने लगे।

विजय की तुतारियां बजने लगी

- नेतोजी पालकर ने अम्बा नदी के दाहिने तट पर खड़ी सेना को अपना सफ़ेद निशाना दिखाया।
- उसने सफेद निशानों को गोल-गोल घुमाकर लड़ाई रोकने का इशारा किया।
- फिर भगवा ध्वज गोल-गोल घूमता रहा और गाजे-बाजे के साथ विजय का प्रतीक विदाई संकेत देता रहा।

अंबेनळी और उम्बर पहाड़ी पर महाराज खड़े थे

सफेद पोशाक में महाराज का स्वरूप दर्शन

शर्तों का सटीक आज्ञापालन

- 3. बैलों और घोड़ों को एक ओर ले जाओ और उनके साथ नौकर-चाकरों को भी निकाल दो और घोड़ों और बैलों के झुण्ड को लेकर आगे बढ़ जाओ।
- 4. नदी तल में नकदी, तिजोरियाँ तथा आभूषणों को एक स्थान पर रखना तथा उन पर नजर रखने के लिए अलग से सैनिक तैनात करना।
- 5. सेना के साथ आने वाले अन्य जानवरों को दानागोटा नदी के दूसरी ओर घास और अनाज इकट्ठा करने के लिए भेजा जाना चाहिए।
- 6. अनाज, खाने-पीने की चीजें, बर्तन-भाडे अलग रखें।

घाट के मुहाने पर अपमानित सैनिकों की तलाशी

करतलब खान और उसके सरदार सिर झुकाकर लौट गये

- इस पूरे काम में तीन घंटे से अधिक समय बीत जाने के बाद शाम को सूर्यास्त के करीब खान के सभी सैनिक धीरे-धीरे घाट के शीर्ष पर लौट आये।
- जब आखिरी सैनिक खुले हाथों से कुर्वंडा घाटी से बाहर नहीं निकलने लगा;
- तब उनके पीछे उसके सैनिकों ने स्वयं खान और उसके बड़े-बड़े सरदारों को सिर झुकाये लौटते देखा।
- सभी महत्वपूर्ण वस्तुओं को त्यागने के आदेश के बाद, शिवाजी महाराज ढेर से प्राप्त वस्तुओं का निरीक्षण करने और बाद के आदेश देने के लिए नीचे उतरे।

अपमानित सैनिकों की घाट: माथे पर झड़ती

बचा हुआ सामान - पशु चारा

- महाराजने पकड़े गए सामान और लोगों को संबोधित करते हुए कहा - "मुझे तुमसे कोई दुश्मनी नहीं है। ये जानवर तुम्हारे परिचित हैं और तुम उनकी देखभाल कर सकते हो। इसलिए यदि तुम उनके साथ रहना चाहते हो तो रहो।"
- "हमारे सैनिक युवाओं को पशुओं की देखभाल, प्रजनन और प्रशिक्षण में प्रशिक्षित किया जाए। जब हमारे लोग जानवरों के अभ्यस्त हो जाएं, तब तुम चाहो तो अपने गाँव जा सकते हो या यहीं रह सकते हो।"
- कोंकण के गाँवों में कई मिश्रित मुस्लिम बिरादरियाँ देखी जा सकती हैं, जैसे कि शिकलगार, तांबोली, नदाफ, अत्तर, मोमिन, लोहार, सुतार, नाई, मदारी, पिंजारी, फकीर।

मुग़ल सैनिकों की बदनामी और शाहिस्ते खाँ की फजिहत

- शूरपंडिता रायबागन ने शिवाजी महाराज को एक अनुभवी योद्धा, निर्णय लेने की क्षमता, मराठी राष्ट्र के एक युवा राजा के रूप में देखा जो सेना और लोगों की परवाह करता था। हालाँकि उन्हें लगा कि उन्हें भी ऐसे राज्य का हिस्सा बनना चाहिए, लेकिन उन्होंने परिस्थिति के अनुसार समझदारी से मुगलों के साथ रहने का विचार किया।
- पुणे लौटने के बाद, करतलबत खान के अपमान से आहत योद्धा सरदार, शाहिस्ते खान के प्रति किए गए अन्याय को जलाकर, गुस्सा करके और बदनाम करके अपना गुस्सा छिपा रहे थे।
- खोए हुए जानवर, हथियारों का जखीरा, भारी धन, रसद, बदनामी का हार, 'हम भतीजे औरंगजेब को क्या मुँह दिखाएँगे'? ऐसा महसूस करते हुए, दक्षिण के कमांडर इन चीफ लेफ्टिनेंट जनरल शाहिस्तेखान आश्वस्त थे।

युद्ध के बाद महाराज का दूरदर्शी नेतृत्व

- महाराज ने इस लड़ाई से प्राप्त हथियारों को उन शूर वीरों को दिया जिन्हें जरूरत थी, और उन्होंने अपने गांव - खेती - गांव के युवाओं को इकठ्ठाकर उन्हें प्रशिक्षण दिया, जितनी तलवारें-ढाल, धनुष्य-बाण, गोफणताण, आदि यहां से ली गई थीं, उतने ही पैदल सैनिकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होगी, ऐसा निर्णय लिया गया।
- जिन्होंने घोड़े मांगे थे, उन्होंने जाति, आयु, रंग, चिह्न आदि देखकर अपने साथ घोड़ा-घोड़ी की जोड़ी एकत्र करने, पैदास के लिए पानी-घास, खास खाना तैयार करने, खुराक देने, लगाम, खोगीर बनाने, पाय(नाल)बंद, पागा की सुरक्षा और स्वच्छता रखने की आज्ञा दी।
- ऐसी दैनिक देखभाल के लिए, मुग़ल प्रवीण कामगारों को आपस में बाँटने और उन्हें वेतन देने का स्वीकार करके न्याय की अनुमति दी।

विचारशील निर्णय और कार्यान्वयन

- उपयोग के लिए दिए गए बैलों का उपयोग पूरी सावधानी से खेती में किया जाए और आगे जरूरत पड़ने पर उन बैलों को माल ले जाने के लिए लाने को कहा गया।
- हमाल, मजदूरों का बंटवारा कर उन्हें सरदारों के साथ भेज दिया गया। जो लोग गैर-मराठी मुलुकों से संबंधित थे, उन्हें चार से अधिक के समूहों में विभाजित किया गया और दूर भेज दिया गया।
- गावं के लोगों को बुलाकर जल्दी खराब होने वाली खाद्य सामग्री, अनाज लेने को कहा गया। उन्होंने गावं वालों को बुलाकर बड़े बर्तनों और भारी सामान को निपटाने का प्रबंधन सरपंच को दिया.

दूसरे देशों के कारीगरों से सीखना

- गाँव के युवाओं को आदेश दिया गया कि वे जानवरों का प्रजनन और उनकी देखभाल कैसे करें, पशुपालन के विशेषज्ञों से घुड़दौड़ और तीरंदाजी की तकनीक सीखें।
- इसके लिए गांव में कुश्ती तलवारबाजी के अभ्यास आखाडों की स्थापना की गई।
- गिरफ्तार किए गए उन लोगों को कुछ समय बाद रिहा करने का आदेश दिया गया जो परमुलुख गांव जाना चाहते थे।
- बाद में, उनमें से कुछ अपने-अपने क्षेत्रों में चले गए लेकिन कुछ वहीं रहे, अपने आस-पास के लोगों के बीच सद्भाव बनाया, शादी की और अपना घर बसाया।
- यहां के लोगों ने कृषि और युद्ध में उपयोग होने वाले लोहे, चमड़े के सामान का निर्माण और बिक्री और पालतू जानवरों की आपूर्ति करके अपनी आजीविका का साधन बनाया।

आदर्श नियोजन और सफलता

- इस अभियान में, महाराज ने अपने साथ लड़ने वाले बहादुर मावलों को पुरस्कृत करने के लिए गहनों के विशाल भंडार का इस्तेमाल किया और अर्जित धन को सेना के खर्चों के लिए इस्तेमाल करने के लिए राजकोष में जमा कर दिया गया।
- नेतोजी ने इस सारे काम पर नज़र रखी और अगले प्रदर्शन के लिए अपने अधीन सीखने के लिए हजारों नए अधिग्रहीत अश्व पलटनों की एक सेना तैयार की।
- इस प्रकार इस अभियान में न्यूनतम सैन्य बल का प्रयोग करके अगले अभियानों की योजना बनाते समय भारी धन, हथियार, पशुधन का लाभ उठाया गया।

शरणागत सेनासे व्यवहार करने का आदर्श पाठ

- ❖ शिवाजी महाराज की नीतियाः
- ❖ आत्मसमर्पण के साथ सम्मानः महाराज ने आत्मसमर्पण करने वाले सैनिकों को मारने के बजाय उन्हें सम्मान के साथ वापस भेज दिया।
- ❖ हथियारों और सामानों का वितरणः उन्होंने कब्जा किए गए हथियारों और क़ीमती सामानों को विचारपूर्वक वितरण कर दिया ताकि भविष्य में उनका उपयोग मुगलों के खिलाफ किया जा सके।
- ❖ धार्मिक सहिष्णुताः उन्होंने दुश्मन की धार्मिक भावनाओं का सम्मान किया और उनके धार्मिक स्थलों और रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप नहीं किया।

'जिनेवा कन्वेंशन' के साथ समानता:

- ❖ महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा: उन्होंने महिलाओं और बच्चों को युद्ध की क्रूरता से बचाने के लिए विशेष प्रावधान किए।
- ❖ घायलों और निहत्थे लोगों का सम्मान: उन्होंने घायलों और निहत्थे लोगों के साथ दया और करुणा का व्यवहार किया।
- ❖ 'जिनेवा कन्वेंशन' के साथ समानता:
- ❖ आज, 'जिनेवा कन्वेंशन' युद्ध के दौरान आत्मसमर्पण करने वाले सैनिकों के साथ व्यवहार करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मानदंड स्थापित करता है। शिवाजी महाराज की नीतियां ' जिनेवा कन्वेंशन' के मूल्यों के साथ कई समानताएं साझा करती हैं।
- ❖ निष्कर्ष:
- ❖ उंबरखिंड की विजय, शिवाजी महाराज की सैन्य प्रतिभा के साथ-साथ उनकी नैतिक और मानवीय मूल्यों का भी प्रमाण है। उनकी नीतियां युद्ध के दौरान भी मानवता और सम्मान के महत्व पर बल देती हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं।
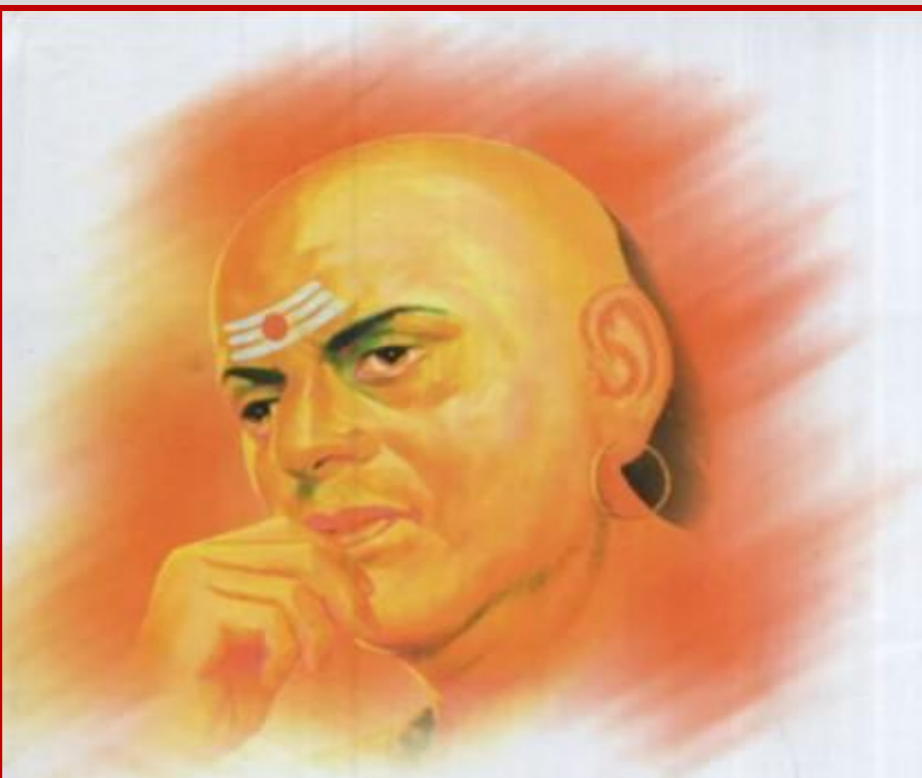
शत्रु को घेर लो; शत्रु का दानापानी बंद करो

...इस प्रकार किले पर कब्ज़ा करने या दुश्मन के शिविर को नष्ट करने के बाद, जो दुश्मन युद्ध में घायल हो गए हैं, जिन्होंने अपने हथियार डाल दिए हैं, अगर वे आत्मसमर्पण करते हैं तो उन्हें आश्रय दिया जाना चाहिए; इसी प्रकार, जिन्होंने युद्ध में भाग नहीं लिया, उनकी भी रक्षा की जानी चाहिए। शत्रु के किले पर कब्ज़ा करने के बाद सबसे पहले शत्रु पक्ष के सैनिकों को किले से बाहर निकाल देना चाहिए और अपने विश्वासी लोगों से किले को अंदर और बाहर से सुरक्षित करने के बाद किले में प्रवेश करना चाहिए।

कौटिल्य अर्थशास्त्र अध्याय 144 पर्युपासना कर्म अवमर्दश्च
पृष्ठ 178 मराठी अनुवाद
पाठकों को शिवाजी महाराज के आचरण और कौटिल्य के नियमों का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए।

II World War Surrenders
द्वितीय विश्व युद्ध के आत्मसमर्पण के बाद आत्मसमर्पण की स्मृति

Surrender Procedure as per Geneva Convention

- I think the only piece of protocol is don't shoot the guy with the white flag but hear what he has to say and/or pass along his self, message or note to those higher up the chain of command.
- Normal procedure is to received the enemy representative in a secure area. Discuss terms of the surrender (if any). Allow the enemy representative to communicate the order to surrender to his forces.
- Order the enemy forces to gather in an area (or travel there) so you can take control of them.
- Secure them from escape, abuse, and provide legally required food, medical care, and rest. Notify the chain of command during this process and possibly civilian authorities.

Geneva Convention Procedure

- If the commander has to surrender, he usually sends a senior officer to go get the enemy's attention. Sometimes, the enemy will only accept the surrender from the highest ranking officer.
- Put your weapons in one place visibly away from you (to show you are no longer attempting to harm the other side and that you are not able to do so quickly).
- Surrender might be a spoken agreement to stop fighting or could involve a written document (common for larger force) and formal surrender of a country almost always involves a written surrender
- Cooperate with the lawful instructions of one's captors.
- Usually the Geneva Convention is operable and the only information one is required to give up is rank, name, date of birth, and service number.

पाकिस्तानी सेनाओं द्वारा ढाका आत्मसमर्पण 1971

लेफ्टिनेंट जनरल जैकब ने केवल 3000 भारतीय सैनिकों के साथ 93,000 पाकिस्तानी सैनिकों को हराया। लेफ्टिनेंट जनरल नियाज़ी लेफ्टिनेंट उन्हें जनरल जेएस अरोड़ा के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

वर्तमान नौसेना, वायुसेना एवं थलसेना के विशेषज्ञ सैन्य अधिकारियों की रचना